॥ श्री गणेशाय नमः ॥

VIJAY YADAV

2/12/1991 2:4AM

Varanasi, Uttar Pradesh, India

PRIYA YADAV

2/4/1994 5:48AM

Jaunpur, Uttar Pradesh, India

निर्मित

VEDIC rishi

कुंडली मिलान का महत्व

ज्योतिष शास्त्र, विश्व में और प्रत्येक प्राणी की जीवनधारा में हर पल घटने वाली संभाव्य घटनाओं का अनुमान के आधार पर संभाव्य विवरण प्रस्तुत करता है। गृहस्थ आश्रम में प्रवेश हेतु विवाह आवश्यक है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार किसी जातक की प्रकृति ,अभिरुचि ,उसका व्यक्तित्व और उसका व्यव्हार उसके जन्म नक्षत्र और राशी के आधार पर निर्धारित होता हैं। इसी आधार पर वर -वधु के जन्म नक्षत्र और जन्म राशी का मिलान करना गुण मिलान कहलाता हैं। गुण मिलान के आधार पर जाना जाता हैं की दोनों में परस्पर कैसा सम्बन्ध रहेगा।

कुंडली मिलान एक प्राचीन प्रणाली है जिसके द्वारा संभावित वर-वधू के आपसी तालमेल का आकलन किया जाता है। वर-वधू के वैवाहिक जीवन को सुखद और अनुकूल बनाने के लिए यह पहला कदम होता है। विवाह के उपरांत वर/कन्या को भविष्य में समस्याओं का सामना न करना पड़े इसलिए विवाह पूर्व वर/कन्या के माता-पिता, दोनों की जन्मकुण्डली का मिलान करवाते है, जोकि अति आवश्यक है|

प्रस्तुत कुंडली मिलान रिपोर्ट में सभी प्रमुख जन्मपत्रिका मिलान के विधियों का प्रयोग एवं विश्लेषण किया गया है। इनमे अष्टकूट मिलान, दशकूट मिलान, मांगलिक मिलान, रज्जु व वेध दोष विश्लेषण के साथ ही उनके फल भी दिए गए हैं।

सामान्य विवरण

Vijay	गुण	Priya
2/12/1991	जन्म दिनांक	2/4/1994
2:4	जन्म समय	5:48
25 N 19	अक्षांश	25 E 44
82 N 58	देशांतर	82 E 41
+5:30	समय क्षेत्र	+5:30
6:26:50	सूर्योदय	5:50:0
17:7:32	सूर्यास्त	18:16:9
23:44:38	अयनांश	23:46:36

ज्योतिषीय विवरण

Vijay	गुण	Priya
वैश्य	वर्ण	क्षत्रिय
मानव	वश्य	मानव
व्याघ्र	योनि	स्वान
राक्षस	गण	राक्षस
मध्य	नाड़ी	आदि
बुध	राशि स्वामी	गुरु
चित्रा	नक्षत्र	मूल
मंगल	नक्षत्र स्वामी	केतु
1	चरण	2
सौभाग्य	योग	वरीयान
बालव	करण	विष्टि
कृष्ण एकादशी	तिथि	कृष्ण सप्तमी
मध्य	युज्जा	प्रभाग
पृथ्वी	तत्त्व	अग्नि
पे	नामाक्षर	यो
चांदी	पाया	ताम्र

vedicrishi.in

ग्रह स्थिति

Vijay ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	वृश्चिक	15:24:00	मंगल	अनुराधा	शनि	3
चन्द्र	--	कन्या	25:26:42	बुध	चित्रा	मंगल	1
मंगल	--	वृश्चिक	08:12:54	मंगल	अनुराधा	शनि	3
बुध	R	वृश्चिक	29:34:46	मंगल	ज्येष्ठा	बुध	3
गुरु	--	सिंह	19:33:50	सूर्य	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	12
शुक्र	--	तुला	01:07:34	शुक्र	चित्रा	मंगल	2
शनि	--	मकर	09:05:15	शनि	उत्तर षाढ़ा	सूर्य	5
राहु	R	धनु	17:39:14	गुरु	पूर्व षाढ़ा	शुक्र	4
केतु	R	मिथुन	17:39:14	बुध	आर्द्रा	राहु	10
लग्न	--	कन्या	16:48:12	बुध	हस्त	चन्द्र	1

Priya ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	मीन	18:15:10	गुरु	रेवती	बुध	1
चन्द्र	--	धनु	04:18:57	गुरु	मूल	केतु	10
मंगल	--	कुम्भ	26:16:52	शनि	पूर्व भाद्रपद	गुरु	12
बुध	--	कुम्भ	24:14:04	शनि	पूर्व भाद्रपद	गुरु	12
गुरु	R	तुला	19:17:18	शुक्र	स्वाति	राहु	8
शुक्र	--	मेष	06:28:27	मंगल	अश्विनी	केतु	2
शनि	--	कुम्भ	13:39:14	शनि	शतभिसा	राहु	12
राहु	R	वृश्चिक	02:29:47	मंगल	विशाखा	गुरु	9
केतु	R	वृष	02:29:47	शुक्र	कृतिका	सूर्य	3
लग्न	--	मीन	16:17:15	गुरु	उत्तर भाद्रपद	शनि	1

vedicrishi.in

जन्म कुंडली

लग्न कुंडली

Vijay

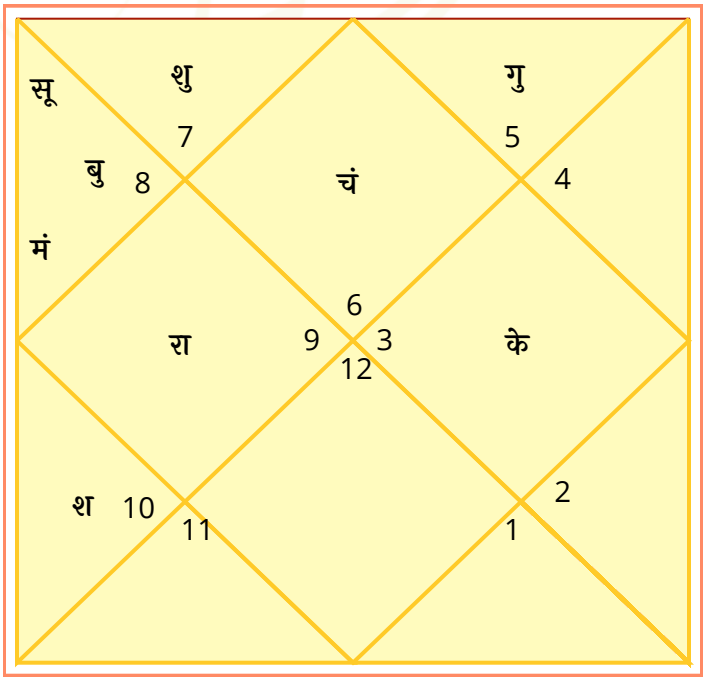

Priya

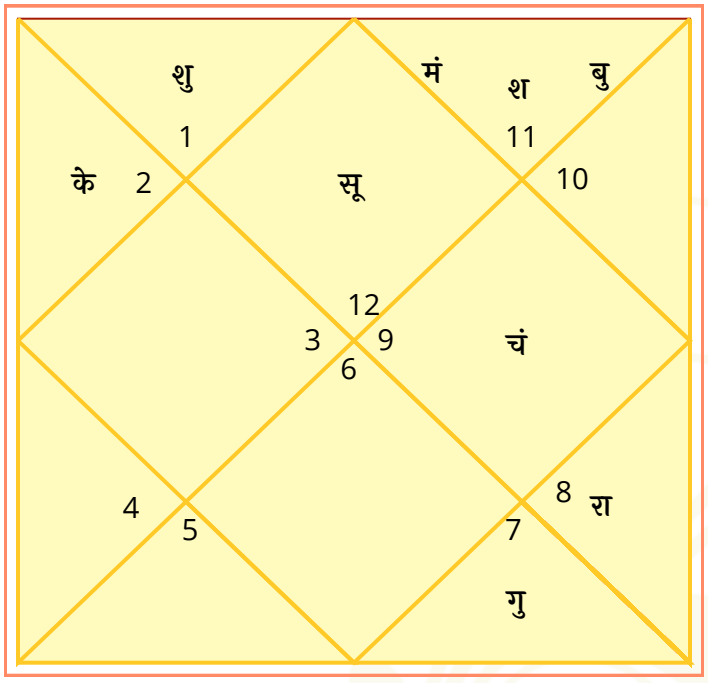

चलित कुंडली

Vijay

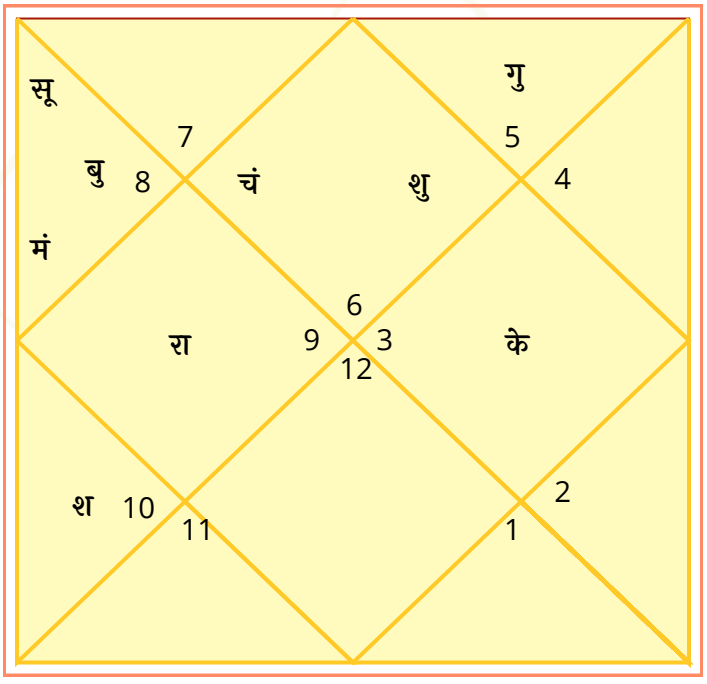

Priya

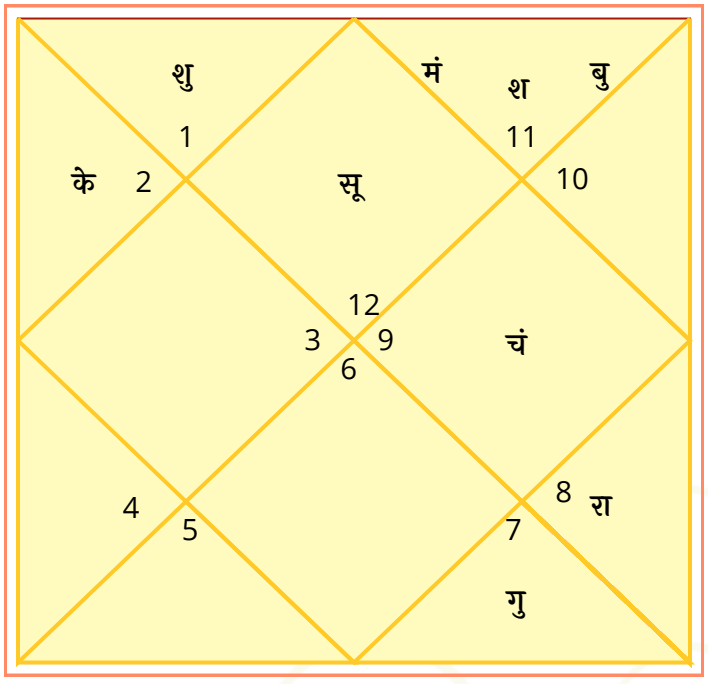

vedicrishi.in

चंद्र कुंडली

Vijay

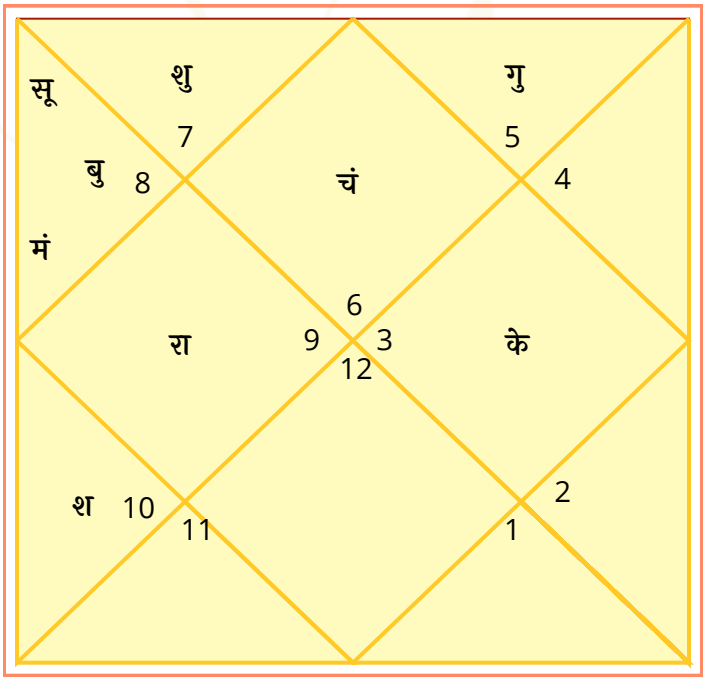

Priya

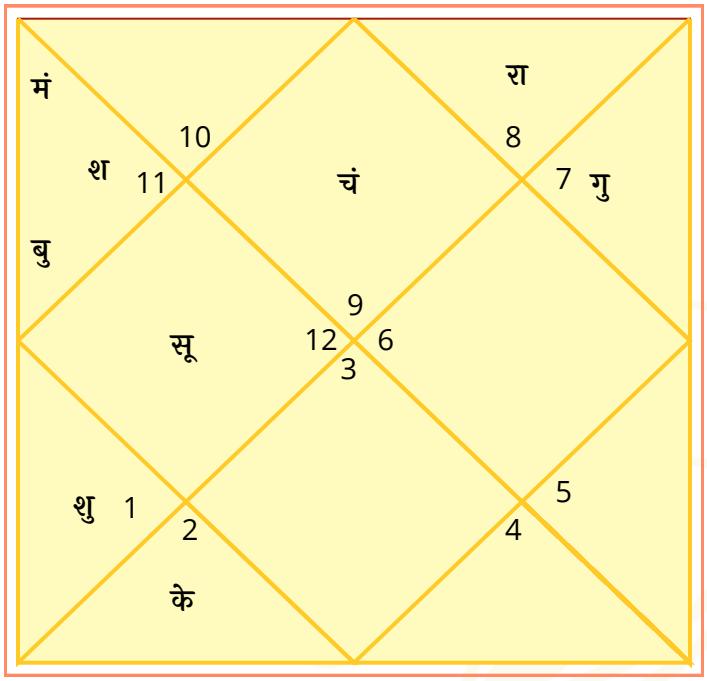

नवमांश कुंडली

Vijay

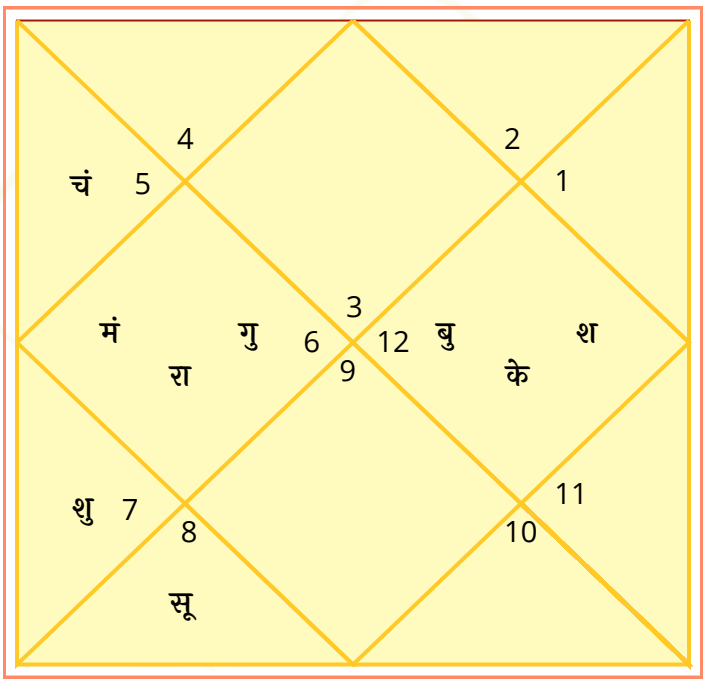

Priya

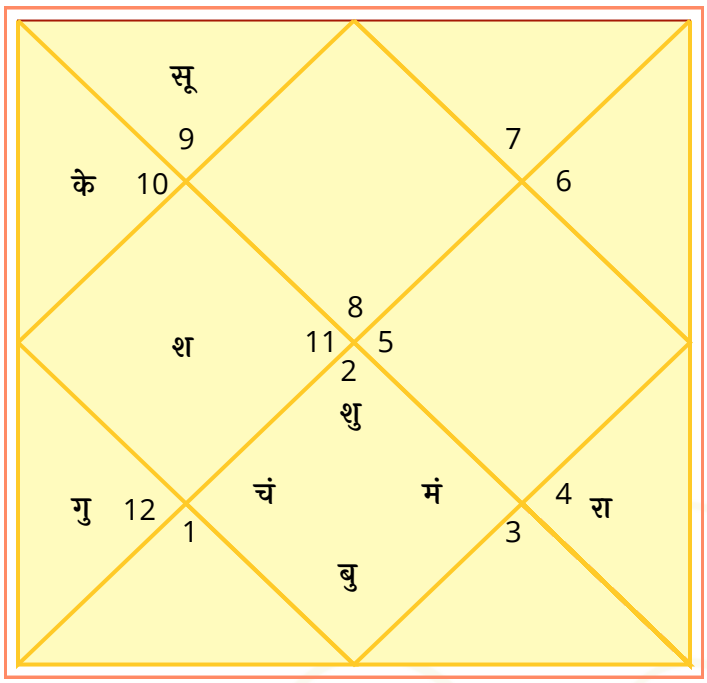

vedicrishi.in

वर्त्तमान दशा

महादशा

मंगल

मंगल	22-10-1997 21:47
राहु	23-10-2015 09:47
गुरु	23-10-2031 09:47
शनि	23-10-2050 03:47
बुध	23-10-2067 09:47
केतु	23-10-2074 03:47
शुक्र	23-10-2094 03:47
सूर्य	23-10-2100 15:47
चन्द्र	24-10-2110 03:47

अंतर दशा

मंगल > गुरु

गुरु	10-12-2017 14:35
शनि	22-06-2020 21:47
बुध	28-09-2022 19:23
केतु	04-09-2023 16:59
शुक्र	05-05-2026 16:59
सूर्य	21-02-2027 21:47
चन्द्र	22-06-2028 21:47
मंगल	29-05-2029 19:23
राहु	23-10-2031 09:47

प्रत्यंतर दशा

मंगल > गुरु > गुरु

गुरु	04-02-2016 07:14
शनि	06-06-2016 16:11
बुध	25-09-2016 01:28
केतु	09-11-2016 12:21
शुक्र	19-03-2017 09:09
सूर्य	27-04-2017 08:11
चन्द्र	01-07-2017 06:35
मंगल	15-08-2017 17:28
राहु	10-12-2017 14:35

सूक्ष्म दशा

मंगल > गुरु > गुरु > राहु

राहु	02-09-2017 06:14
गुरु	17-09-2017 20:15
शनि	06-10-2017 08:24
बुध	22-10-2017 21:47
केतु	29-10-2017 17:25
शुक्र	18-11-2017 04:57
सूर्य	24-11-2017 01:12
चन्द्र	03-12-2017 18:57
मंगल	10-12-2017 14:35

vedicrishi.in

वर्त्तमान दशा

महादशा

मंगल

मंगल	22-10-1997 21:47
राहु	23-10-2015 09:47
गुरु	23-10-2031 09:47
शनि	23-10-2050 03:47
बुध	23-10-2067 09:47
केतु	23-10-2074 03:47
शुक्र	23-10-2094 03:47
सूर्य	23-10-2100 15:47
चन्द्र	24-10-2110 03:47

अंतर दशा

मंगल > गुरु

गुरु	10-12-2017 14:35
शनि	22-06-2020 21:47
बुध	28-09-2022 19:23
केतु	04-09-2023 16:59
शुक्र	05-05-2026 16:59
सूर्य	21-02-2027 21:47
चन्द्र	22-06-2028 21:47
मंगल	29-05-2029 19:23
राहु	23-10-2031 09:47

प्रत्यंतर दशा

मंगल > गुरु > गुरु

गुरु	04-02-2016 07:14
शनि	06-06-2016 16:11
बुध	25-09-2016 01:28
केतु	09-11-2016 12:21
शुक्र	19-03-2017 09:09
सूर्य	27-04-2017 08:11
चन्द्र	01-07-2017 06:35
मंगल	15-08-2017 17:28
राहु	10-12-2017 14:35

सूक्ष्म दशा

मंगल > गुरु > गुरु > राहु

राहु	02-09-2017 06:14
गुरु	17-09-2017 20:15
शनि	06-10-2017 08:24
बुध	22-10-2017 21:47
केतु	29-10-2017 17:25
शुक्र	18-11-2017 04:57
सूर्य	24-11-2017 01:12
चन्द्र	03-12-2017 18:57
मंगल	10-12-2017 14:35

vedicrishi.in

मांगलिक दोष क्या होता है

जिस जातक की जन्म कुंडली, लग्न/चंद्र कुंडली आदि में मंगल ग्रह, लग्न से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भावों में से कहीं भी स्थित हो, तो उसे मांगलिक कहते हैं।

कुण्डली में जब लग्न भाव, चतुर्थ भाव, सप्तम भाव, अष्टम भाव और द्वादश भाव में मंगल स्थित होता है तब कुण्डली में मंगल दोष माना जाता है। सप्तम भाव से हम दाम्पत्य जीवन का विचार करते हैं। अष्टम भाव से दाम्पत्य जीवन के मांगलीक सुख को देखा जाता है। मंगल लग्न में स्थित होने से सप्तम भाव और अष्टम भाव दोनों भावों को दृष्टि देता है। चतुर्थ भाव में मंगल के स्थित होने से सप्तम भाव पर मंगल की चतुर्थ पूर्ण दृष्टि पड़ती है। द्वादश भाव में यदि मंगल स्थित है तब अष्टम दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है।

मूल रूप से मंगल की प्रकृति के अनुसार ऐसा ग्रह योग हानिकारक प्रभाव दिखाता है, लेकिन वैदिक पूजा-प्रक्रिया के द्वारा इसकी भीषणता को नियंत्रित कर सकते है। मंगल ग्रह की पूजा के द्वारा मंगल देव को प्रसन्न किया जाता है, तथा मंगल द्वारा जनित विनाशकारी प्रभावों, सर्वारिष्ट को शांत व नियंत्रित कर सकारात्मक प्रभावों में वृद्धि की जा सकती है।

मांगलिक दोष प्रभाव

- मंगल ग्रह की पहले भाव में स्थिति:

लग्न में मंगल हो तो स्वास्थ्य पर दुषप्रभाव पड़ता हैं, व्यक्ति स्वभाव से उग्र एवं जिद्दी होता है। मंगल के दुश प्रभाव से पति या पत्नी से दूरियां अथवा तलाक भी हो सकता है ! सातवी दृष्टि के कारण जीवन साथी को किसी धारदार हथियार से चोट की आशंका भी बनी रहती है !

- मंगल ग्रह की द्वितीय भाव में स्थिति :

मंगल दुसरे स्थान पर होने से परिवार में सदस्यों की बढ़ोतरी नहीं होती ! इस प्रकार या तो विवाह देर से होता है या होता ही नहीं, कई बार विवाह के उपरान्त संतान उत्पत्ति में रुकावटे आती है!

- मंगल ग्रह की चतुर्थ भाव में स्थिति:

इस घर में मंगल के दुश प्रभाव से जातक के विवाहित जीवन में आने वाली खुशियाँ मनो ख़त्म सी हो जाती है, विवाह हो जाने के बावजूद विवाह का सुख नहीं मिलता ! चौथे भाव पर मंगल के दुश प्रभाव से जीवन साथी से दूरियां अथवा तलाक भी हो सकता है !

- मंगल ग्रह की सप्तम भाव में स्थिति:

सातवें स्थान में स्थिति मंगल दाम्पत्य सुख (रति सुख) की हानि तथा पत्नी के स्वास्थ्य को भी हानि पहुँचाता है। इस स्थान में स्थित मंगल की दशवें एवं दूसरे भाव पर दृष्टि पड़ती है। दशम से अजीविका का तथा द्वितीय स्थान से कुटुम्ब का विचार किया जाता है। अतः इस स्थान में स्थित मंगल आजीविका एवं कुटुम्ब पर भी अपना प्रभाव डालता है।

- मंगल ग्रह की अष्टम भाव में स्थिति:

कुंडली का आठवा घर जीवन साथी की उम्र से सम्बंधित होता है ! इस घर में मंगल के आने से जीवन साथी की कम आयु का खतरा बना रहता है! इस प्रकार आठवे घर में मंगल दोष होने से विवाहित जीवन पर दुश प्रभाव पड़ता है!

- मंगल ग्रह की बारहवे भाव में स्थिति:

जिस जातक की कुंडली के बारहवे घर में मंगल होता है वह जातक अधिक व्याभिचारी होता है, जिस कारण से जातक कई लोगो के साथ शारीरिक सम्बन्ध बनाता है तथा किसी भयंकर गुप्त अंगो की बिमारी से ग्रिस्त हो जाता है!

vedicrishi.in

भाव के आधार पर

राहु आपके कुंडली में चतुर्थ भाव में है।

दृष्टि के आधार पर

आपके कुंडली का चतुर्थ भाव केतु से दृष्ट है।

आपके कुंडली के द्वादश भाव को राहु देख रहा है।

राहु , आपके कुंडली के अष्टम भाव को देख रहा है।

शनि की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

केतु की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

सप्तम भाव शनि से दृष्ट है।

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत	22.5%

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है परन्तु मांगलिक दोष का प्रभाव बहुत कम होने से किसी हानि की अपेक्षा नहीं है । कुछ साधारण उपायो की मदद से इसे और कम किया जा सकता है।

vedicrishi.in

भाव के आधार पर

सूर्य लग्न भाव में कुंडली में स्थित है।

द्वादश भाव में मंगल अवस्थित है।

शनि द्वादश भाव में आपके कुंडली में स्थित है।

दृष्टि के आधार पर

राहु , आपके कुंडली के पंचम भाव को देख रहा है।

आपकी कुंडली में लग्न भाव को राहु देख रहा है।

शनि की दृष्टि आपके कुडंली के द्वितीय भाव पर पड़ रही है।

सप्तम भाव सूर्य से दृष्ट है।

सप्तम भाव मंगल से दृष्ट है।

सप्तम भाव केतु से दृष्ट है।

मांगलिक विश्लेषण

कुल मांगलिक प्रतिशत	15.25%

मांगलिक फल

कुंडली में मांगलिक दोष है परन्तु मांगलिक दोष का प्रभाव बहुत कम होने से किसी हानि की अपेक्षा नहीं है । कुछ साधारण उपायो की मदद से इसे और कम किया जा सकता है।

vedicrishi.in

मांगलिक विश्लेषण

Vijay मांगलिक विवरण

कुल मांगलिक प्रतिशत - **22.5%**

Priya मांगलिक विवरण

कुल मांगलिक प्रतिशत - **15.25%**

मांगलिक मिलान परिणाम

लड़का मांगलिक नहीं है; और न ही लड़की मांगलिक है। दोनों कुंडलियों में मंगल दोष अनुपस्थित होने के कारण भविष्य में उनके वैवाहिक जीवन पर कोई कुप्रभाव नहीं पड़ेगा यह विवाह किया जा सकता है।

vedicrishi.in

अष्टकूट विवरण

अष्टकूट क्या होता है?

कुण्डली मिलान की अष्टकूट पद्धति में, गुणों की अधिकतम संख्या ३६ है। वर और कन्या के बीच गुण अगर ३१ से ३६ के मध्य में हो तो उनका मिलाप अति उत्तम होता है। गुण अगर २१ से ३० के मध्य में हो तो वर और कन्या का मिलाप बहुत अच्छा होता है। गुण अगर १७ से २० के मध्य में हो तो वर और कन्या का मिलाप साधारण होता है और गुण अगर ० से १६ के मध्य में हो तो इसे अशुभ माना जाता है।

आठो कूट इस प्रकार से हैं - १) वर्ण २) वश्य ३) तारा ४) योनि ५) ग्रह मैत्री ६) गण ७) भकूट और ८) नाडी

वर्ण	वश्य	तारा	योनि
ग्रह मैत्री	गण	भकूट	नाड़ी

अष्टकूट मिलान विधि:

अष्टकुट मतलब ८ अलग-अलग कुटो का मिलान। इन सभी कुटो के मिलान में जन्म नक्षत्र और जन्म राशि का उपयोग किया जाता है।

अष्टकूट के आठों कूट इस प्रकार हैं :

वर्ण – जातक के वर्ण से उसकी कार्य क्षमता , व्यक्तित्व , आचरण- व्यावहार तथा उससे जुड़ी हुई कई प्रमुख बातों का पता चल जाता है ।

वश्य – वर / कन्या की अभिरुचि तथा शारीरिक ,मानसिक ,भावनात्मक प्रकृति को दर्शाता है ।

तारा – तारा कूट वर – कन्या के वैचारिक मतभेद , विरोधात्मकता , धन की स्थिति व आपसी रिश्तों में सहजता को दर्शाता है ।

योनि – योनी वर - कन्या के आपसी व्यावहार विचार , रहन-सहन ,इत्यादि को दर्शाता है । यह शारीरिक आकर्षण तथा लैंगिक अनुकूलता (मूल वृत्ती) भी दर्शाता है ।

ग्रह मैत्री – यह दर्शाता है वर-कन्या की मनोवृत्ती एवं स्वभाव के तालमेल को । ग्रह मैत्री मनोवैज्ञानिक स्वभाव के विश्लेषण का सबसे अच्छा उपकरण है ।

– गण दर्शाता है , परस्पर प्रेम , सामंजस्य , सौमनस्यता, मनोदशा , एक दूसरे के प्रति आकर्षण और लगाव को ।

भकूट – यह दर्शाता है : पारस्परिक आकर्षण , अनुराग , आसक्ति स्नेह एवं रचनात्मकता तथा सृजनात्मकता ।

नाड़ी – दर्शाता है – हर्षोउल्लास का संतुलन , नाड़ी अर्थात – नब्ज जो हमारे शरीर की तांत्रिक उर्जा का प्रतिनिधि होता है तथा स्मरणशक्ति चेतना का संचालन यहीं से होता है ।

vedicrishi.in

अष्टकूट

गुण	विवरण	पुरुष	स्त्री	कुल	प्राप्त
वर्ण	कार्य क्षमता और व्यक्तित्व	वैश्य	क्षत्रिय	1	0
वश्य	व्यक्तिगत संबंध	मानव	मानव	2	2
तारा	समृद्धि और भाग्य	चित्रा	मूल	3	1.5
योनि	अंतरंग सम्बन्ध	व्याघ्र	स्वान	4	1
ग्रह मैत्री	मैत्री मेल	बुध	गुरु	5	0.5
गण	सामाजिक दायित्व	राक्षस	राक्षस	6	6
भकूट	रचनात्मक क्षमता	कन्या	धनु	7	7
नाड़ी	संतान	मध्य	आदि	8	8
कुल	-	-	-	36	26

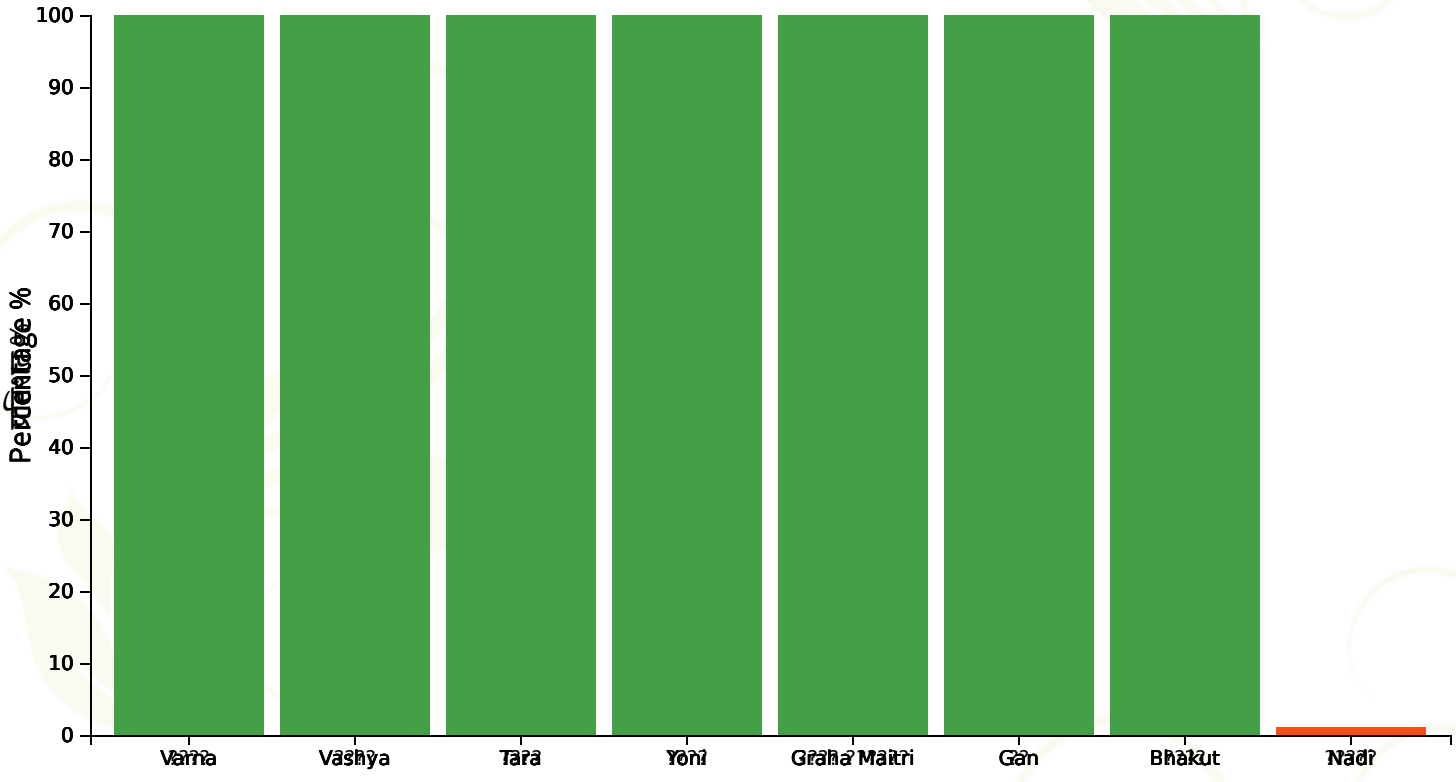

vedicrishi.in

दशकूट क्या होता है

एक लंबे और सुखी विवाहित जीवन को सुनिश्चित करने के लिए, प्राचीन भारतीय ऋषियों और संतों ने विवाह अनुकूलन योग्यता या विवाहयोग्य संगतता को जांचने के लिए एक विधि तैयार की जिसे कुंडली मिलान कहा जाता है। उन्होंने पुरुष और स्त्री के जन्म नक्षत्रो को लेकर कूट मिलान विधि तैयार की। शुरुआत में कुल २० कुटो का उपयोग मिलान पद्धति में किया जाता था। लेकिन इन २० कुटो में से केवल १० कुट ही वास्तव में कुंडली मिलान के लिए उपयोगी थे। भारत के कुछ हिस्सों में केवल 8 कूट को लेकर ही कुंडली मिलान किया जाता है। दसकुट मिलान की विधि को हिंदी में दश पोरिथम और तमिल में १० पॉरुथम कहा जाता है।

दसो कूट इस प्रकार से हैं - १) दीन २) गण ३) योनि ४) राशि ५) राश्याधिपति ६) रज्जू ७) वेध ८) वश्य ९) महेन्द्रं और ८) स्त्रिदिर्घ

दीन	गण	योनि	राशि
राश्याधिपति	रज्जु	वेध	वश्य
महेंद्र	स्त्री दीर्घ		

दशकूट नीचे दिए गए प्रकार से है :

दीन – तारा कूट वर – कन्या के वैचारिक मतभेद , विरोधात्मकता , धन की स्थिति व आपसी रिश्तों में सहजता को दर्शाता है ।

गण – गण दर्शाता है , परस्पर प्रेम , सामंजस्य , सौमनस्यता, मनोदशा , एक दूसरे के प्रति आकर्षण और लगाव को ।

योनि – योनी वर - कन्या के आपसी व्यावहार विचार , रहन-सहन ,इत्यादि को दर्शाता है । यह शारीरिक आकर्षण तथा लैंगिक अनुकूलता (मूल वृत्ती) भी दर्शाता है ।

राशि – यह दर्शाता है : पारस्परिक आकर्षण , अनुराग , आसक्ति स्नेह एवं रचनात्मकता तथा सृजनात्मकता ।

राश्याधिपति – यह दर्शाता है वर-कन्या की मनोवृत्ती एवं स्वभाव के तालमेल को । ग्रह मैत्री मनोवैज्ञानिक स्वभाव के विश्लेषण का सबसे अच्छा उपकरण है ।

रज्जु – यह दस कुटो में सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि यह पति के लिए एक लंबा जीवन सुनिश्चित करता है।

वेध – वेध का मतलब दु:ख है विवाहित जीवन में सभी बुराइयों और नुकसान कारक होगा अगर कुंडली मिलान में वेध दोष उपस्थित है।

वश्य – वर / कन्या की अभिरुचि तथा शारीरिक ,मानसिक ,भावनात्मक प्रकृति को दर्शाता है ।

महेंद्र – दर्शाता है – हर्षोउल्लास का संतुलन , नाड़ी अर्थात – नब्ज जो हमारे शरीर की तांत्रिक उर्जा का प्रतिनिधि होता है तथा स्मरणशक्ति चेतना का संचालन यहीं से होता है ।

स्त्री दीर्घ – यह धन और समस्त समृद्धि का संचय सुनिश्चित करता है।

vedicrishi.in

गुण	पुरुष	स्त्री	कुल	प्राप्त
दीन	चित्रा	मूल	3	0
गण	राक्षस	राक्षस	4	4
योनि	व्याघ्र	स्वान	4	1
राशि	कन्या	धनु	7	7
राश्याधिपति	बुध	गुरु	5	0.5
रज्जु	-	-	5	5
वेध	चित्रा	मूल	2	2
वश्य	मानव	मानव	2	2
महेंद्र	चित्रा	मूल	2	0
स्त्री दीर्घ	चित्रा	मूल	2	2
कुल	-	-	36	23.5

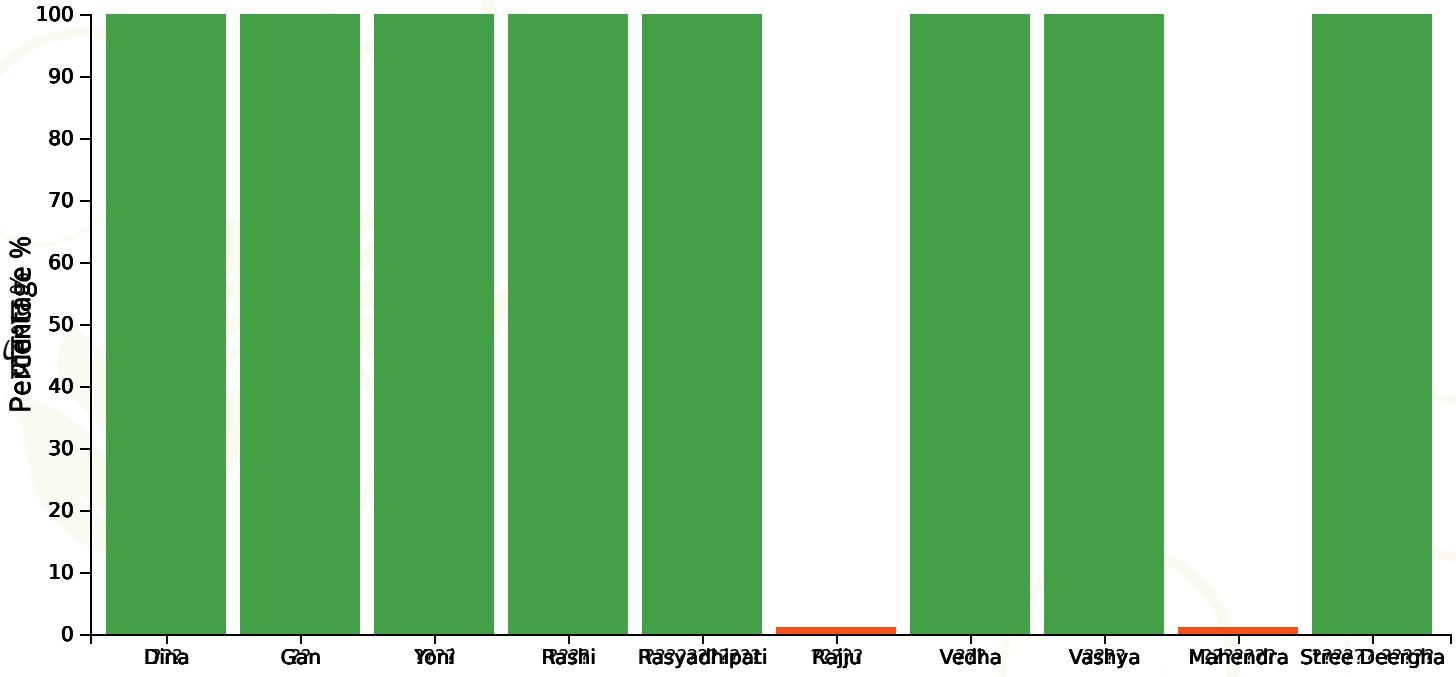

vedicrishi.in

वेध दोष क्या होता है ?

वेध तकनीक का प्रयोग जोड़ी के पूरी तरह से एक साथ आने से रोकने वाले अत्यधिक अवरोधों के निर्धारण के लिए किया जाता है। रिश्ते को प्रभावित कर सकने वाले दो प्रमुख महा-दोषो में से एक है।

वेध दोष विश्लेषण

उपस्थित नहीं है।

लड़के के नक्षत्र और लड़की के नक्षत्र के बीच में कोई वेध दोष है।

vedicrishi.in

भकूट क्या होता है?

भकूट राशियों के अंतर पर आधारित होता है भकूट का अर्थ ही है , राशियों का समूह भकूट को अधिकतम 7 गुण दिए गए हैं । यह दर्शाता है : पारस्परिक आकर्षण , अनुराग , आसक्ति स्नेह एवं रचनात्मकता तथा सृजनात्मकता । वर- कन्या की राशियाँ यदि एक दूसरे से 6 - 8 , 5 – 9 या 2 – 12 हो तो भकूट दोष लगता है और 0 (शून्य) अंक प्राप्त होते हैं । उपर्युक्त तीनों दोषों को छोड़कर अन्य सभी जोड़ियों को 7 अंक प्राप्त है ।

भकूट दोष विश्लेषण

Vijay
कन्या

Priya
धनु

भकूट दोष उपस्थित नहीं है।

vedicrishi.in

नाड़ी क्या होता है?

नाड़ी : दर्शाता है – हर्षोउल्लास का संतुलन , नाड़ी अर्थात – नब्ज जो हमारे शरीर की तांत्रिक उर्जा का प्रतिनिधि होता है तथा स्मरणशक्ति चेतना का संचालन यहीं से होता है ।

नाड़ियाँ 3 प्रकार की होती है :1) आदय - वात नाड़ी, 2) मध्य - पित्त नाड़ी , 3)अन्त्य - कफ नाड़ी । वर और कन्या की नाड़ी भिन्न होनी चाहिए । यदि दोनों की नाड़ियाँ एक हुई तो कई दुष्परिणाम देखे जाते हैं , जैसे संतति से संबंधित परेशानियाँ । संतान शारीरिक , मानसिक रूप से अस्वस्थ रहती है , संतान में प्रखर बुद्धि , चेतना स्मरणशक्ति का अभाव रहता है ।

नाड़ी दोष उपस्थित होने पर क्या प्रभाव होता है

गुण मिलान करते समय यदि वर और वधू की नाड़ी अलग-अलग हो तो उन्हें नाड़ी मिलान के 8 में से 8 अंक प्राप्त होते हैं, जैसे कि वर की आदि नाड़ी तथा वधू की नाड़ी मध्या अथवा अंत। किन्तु यदि वर और वधू की नाड़ी एक ही हो तो उन्हें नाड़ी मिलान के 8 में से 0 अंक प्राप्त होते हैं तथा इसे नाड़ी दोष का नाम दिया जाता है। नाड़ी दोष की प्रचलित धारणा के अनुसार वर-वधू दोनों की नाड़ी आदि होने की स्थिति में तलाक या अलगाव की प्रबल संभावना बनती है तथा वर-वधू दोनों की नाड़ी मध्य या अंत होने से वर-वधू में से किसी एक या दोनों की मृत्यु की प्रबल संभावना बनती है।

नाड़ी दोष विश्लेषण

Vijay
मध्य

Priya
आदि

नाडी दोष उपस्थित नहीं है।

vedicrishi.in

अष्टकूट विश्लेषण - I

कार्य क्षमता और व्यक्तित्व

वर्ण - 0/1

क्रियाशीलता मध्यम रहेगी । यथार्थ को समझ कर चलने वाले होंगे । आधुनिक क्षेत्र में सफलता अधिक मिलेगी । मानसिक विचार दोनों का मेल नहीं खाएगा । शारीरिक सहयोग भी नहीं मिलेगा ।

व्यक्तिगत संबंध

वश्य - 2 / 2

दोनों में एक-दूसरे के प्रति आकर्षण ख़ूब रहेगा । आपसी सहमती, शारीरिक मानसिक व भावनात्मक स्तर पर एक-दूसरे के पूरक होंगे । भावनाएँ दोनों की एक-दूसरे से मेल खाएँगी । मानसिक रूप से भी दोनों एक-दूसरे के योग्य होंगे ।

समृद्धि और भाग्य

तारा - 1.5 / 3

धनोपार्जन में अदृश्य बाधाएँ आएँगी । बहुत मेहनत करने के बाद भी पैसे या तो नहीं मिलेंग या मिलेंगे तो कम मिलेंगे । स्थिति धनोपार्जन के लिए अनुकूल नहीं होगी । आपसी रिश्तों में सहजता का भाव नहीं रहेगा पर एक-दूसरे के विरोधी नहीं होंगे । मध्यम संबंध बना रहेगा ।

अंतरंग सम्बन्ध

योनि - 1 / 4

सेक्सुअली एक-दूसरे से संतुष्ट न होनें के कारण एक-दूसरे के प्रति सहज नहीं होंगे । आपस में दूरी बनी रहेगी और व्यावहार में खिन्नता दिखेगी । हालात दोनों के लिए अनुकूल नहीं होंगा । बार बार झगड़े होंगे ।

vedicrishi.in

अष्टकूट विश्लेषण - II

मैत्री मेल

ग्रह मैत्री - 0.5 / 5

Your attributes do not match with each other; ideological differences shall prevail. However, physical compatibility shall prevail. Your love for beauty and adventurous nature harmonize well and you shall both show special interests in aesthetic and enterprising sectors.

सामाजिक दायित्व

गण - 6 / 6

अतिश्रेष्ठ संबंध, परस्पर प्रेम एक-दूसरे की मनोभावनाओं को समझेंगे । एक-दूसरे के बीच सामंजस्य की स्थिति होगी बनी रहेगी । हमेशा एक-दूसरे के प्रति आकर्षण बना रहेगा, आकर्षण प्रबल रहेगा एवं दोनों एक-दूसरे के लिए बिलकुल उपयुक्त होंगे ।

रचनात्मक क्षमता

भकूट - 7 / 7

एक-दूसरे के प्रति आकर्षण मध्यम रहेगा । दोनों का एक-दूसरे के प्रति प्रेम, मिला-जुला रहेगा । अनुकूल तो नहीं पर एक-दूसरे के लिए ठीक रहेंगे । रचनात्मकता मध्यम रहेगी ।

संतान

नाड़ी - 8 / 8

जीवन सुखमय एवं उच्चस्तरीय बीतेगा । संबंध में संतुलन बहुत ही अच्छा रहेगा स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा । संतान से संबंधित किसी भी तरह की समस्या नहीं होगी एवं संबंध मधुर रहेंगे ।

vedicrishi.in

पापसम्यम

Papa (dosha) Comparison is done here by assigning points for the position of Mars, Saturn, Rahu, Ketu and Sun with respect to Lagna, Moon as well as Venus.

Vijay पाप अंक

पाप अंक	लग्न से		चंद्र से		शुक्र से	
	स्थान	पाप	स्थान	पाप	स्थान	पाप
सूर्य	3	0	3	0	2	4.5
मंगल	3	0	3	0	2	6
शनि	5	0	5	0	4	4.5
राहु	4	2.25	4	2.25	3	0
कुल	--	2.25	--	1.125	--	3.75

Priya पाप अंक

पाप अंक	लग्न से		चंद्र से		शुक्र से	
	स्थान	पाप	स्थान	पाप	स्थान	पाप
सूर्य	1	4.5	4	4.5	12	1.5
मंगल	12	4	3	0	11	0
शनि	12	0.75	3	0	11	0
राहु	9	0	12	1	8	6
कुल	--	9.25	--	2.75	--	1.875

पापसम्यम निष्कर्ष

पापसम्यम अशुभ है।

vedicrishi.in

व्यक्तित्व विवेचना

Vijay व्यक्तित्व विवेचना

कन्या राशि के व्यक्ति व्यावहारिक, विश्लेषणात्मक, भेदभाव करने वाले ,तुनुकमिज़ाज शांत, , शर्मीले , गंभीर, विचारशील,सख्त,सतर्क,विनयशील,जानकारी के लिए चौकस, और कुछ हद तक आत्म केन्द्रित होते हैं।

आप एक, सरल सक्रिय और सतर्क दिमाग के मालिक हैं । ज्ञान पाना और उसका अच्छे कार्यों में उपयोग करना आप के लिए महत्वपूर्ण हैं। आप जीवन में पूर्णता पाने के लिए सतत प्रयास करते हैं और जीवन में आपने अपने आदर्श और मापदंड इतनी ऊंचे स्थापित किये हुए हैं कि,हर कोई आपके साथ या आसपास रहना चाहता है।

> "लेकिन कई बार दूसरे उन उच्च आदर्शों के लिए पर्याप्त 'अच्छे ' नहीं हो सकते । आपके भीतर यह विशेष योग्यता है कि कहाँ क्या गलत है यह आप पता लगा लेते हैं।

कभी कभी, हालांकि, आप जिन्हे प्यार करते हैं ,उनके ऊपर और उनकी गतिविधियों पर आपकी आलोचनात्मक दृष्टि अक्सर संबंधों में खटास पैदा कर सकती हैं। आपको निराशावाद औरस्वयं की अत्यधिक आलोचना, अपने इन दो दोषों में सुधार करने की कोशिश करनी चाहिए।आप की प्रवृत्ति विशेष रूप से छोटे क्रिया-कलापों और छोटे छोटे विवरण के बारे में बहुत ज्यादा चिंता करने की हो सकती है।

बहुत ज्यादा चिंता स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे सकती है। आप को हर अनुभव को पचाने और कड़वाहट, अफसोस, द्वेष या असंतोष के बिना इसे आत्मसात करना, सीखने की जरूरत है। अयोग्यता की भावना द्वारा उपजी अपने अन्दर की नकारात्मकता

Priya व्यक्तित्व विवेचना

मीन राशि के व्यक्ति संवेदनशील, दयालु,स्पष्टवादी , कमजोर इच्छाशक्ति वाले, लंबे समय तक पीदभोगी, दिन में सपने देखने वाले , आलसी, शांत,अन्यमनस्क, टाल-मटोल करने वाले , दिखावटी ,आसानी से प्रभावित होने वाले , अव्यावहारिक, , मानसिक, भावनात्मक, रोमांटिक, आदर्शवादी, स्नेही, ,व्यावहारिक जीवन में दिन- प्रतिदिन के व्यावहारिक विषयों से निर्लिप्त रहने वाले और किसी असंभव कार्य को करने की तलाश में रहने वाले होते हैं ।

कई बार आप वर्तमान में होने वाले घटनाक्रम से पूर्णतया अनभिज्ञ रहते हैं । हो सकता है आप अपने जीवन में जीने की अपेक्षा ज़्यादातर सपनों में अधिक जीते हों। संगीत ,नृत्य या दवाओं के व्यापार में आपकी रुचि हो सकती है।

> "आपका अकेलापन इतना अधिक हो सकता है कि बाहरी दुनिया भी उसे ठीक न कर पाए । कई बार एकाकीपन आप के लिए निहायत ज़रूरी हो सकता है। इस धरती पर होने वाली घटनाओं का सामना करना आपके संवेदनशील शरीर और मन के लिए कई बार मुश्किल हो सकता है।

आप अपने आसपास की स्थितियों के प्रति बहुत संवेदनशील रहते हैं और मन से एक मानसिक स्पंज की तरह हो सकते हैं,अर्थात अपने आसपास अच्छा हो या बुरा, सब अपने में समाहित कर लेते हैं।

आप बहुत आकर्षक इंसान हैं, लेकिन ऐसा होने पर भी आप को यह सीखने की जरूरत है कि कैसे अधिक व्यावहारिक व सरल बन सकें और अपनी ऊर्जा को वर्तमान में कैसे केंद्रित किया जाए

vedicrishi.in

से आपको छुटकारा पाने की ज़रूरत है। आप अपनी उम्र से ।
हमेशा छोटे लगते हैं,भले ही आप कितने बडे हों ।

vedicrishi.in

विशेषता - लक्षण

सकारात्मक लक्षण

Vijay

मेधावी | विश्लेषणात्मक | अच्छी स्मृति | समर्पित

Priya

करुणामय | धार्मिक | कृतज्ञ | कलापरक

नकारात्मक लक्षण

Vijay

आत्मविश्वास की कमी | स्वार्थपरायण | चिंतित | अतिपेक्षित

Priya

अंधविश्वासी | कमजोर इच्छाशक्ति | डरपोक | खिन्न व्यक्तित्व

vedicrishi.in

कुंडली मिलान रिपोर्ट

अष्टकूट

लड़का और लड़की की कुंडलियों के अष्टकूट मिलान से उन्हें 36 अँको में से 26 अंक प्राप्त हुए हैं. यह एक उत्तम स्कोर है. परन्तु दोनों के ग्रह मैत्री के गुणांक कम है. यह इस जोड़ी के बीच मानसिक सद्भाव और समन्वय की कमी को दर्शाता है। इसलिए, अष्टकूट विश्लेषण के अनुसार, यह एक अच्छा मैच नहीं है।

दशकूट

लड़का और लड़की की कुंडलियों के दशकूट मिलान से उन्हें 36 अँको में से 23.5 अंक प्राप्त हुए हैं । जिससे दोनों के बीच मानसिक अनुकूलता और आपसी स्नेह बना रहेगा। इसलिए, यह एक सकारात्मक मेल कहा जा सकता है।

मांगलिक

लड़का मांगलिक नहीं है; और न ही लड़की मांगलिक है। दोनों कुंडलियों में मंगल दोष अनुपस्थित होने के कारण भविष्य में उनके वैवाहिक जीवन पर कोई कुप्रभाव नहीं पड़ेगा यह विवाह किया जा सकता है।

मिलान निष्कर्ष

> " विवाह के लिए यह एक अत्युत्तम जोड़ी है. यह युगल एक लंबे समय तक स्थायी रिश्ते में बंधे रहेंगा , जो सुख और समृद्धि के भरा होगा ।

vedicrishi.in

VedicRISHI is committed to provide its user simple and yet interactive platform to organize, view and analyze their horoscopes absolutely free.

Vedic Rishi Astro Pvt. Ltd.
http://www.vedicrishi.in
info@vedicrishi.in
(+91) 22 26359681